[illegible]

वयनाड जिला के आदिवासी

[illegible]

[illegible] The Kerala Institute of [illegible]search, Training and Development Studies of Scheduled Castes and Tribes ([illegible]) [illegible]

कर रही है। नई शिक्षा अभियान के अंतर्गत आदिवासी बच्चों को अपनी ही भाषा में शिक्षा प्रदान करने की योजना भी तैयार हो चुकी है। इसमें इन बातों पर ध्यान दे रहे हैं-

- पाठ्यक्रम प्रत्येक आदिवासी भाषाओं में बनाना
- पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक और व्यावहारिकता, दोनों को समान महत्व
- पाठ्यक्रम में आदिवासी समुदाय से आने वाले व्यक्तियों के योगदानों को शामिल करना
- पाठ्यपुस्तकों का परिवेश आदिवासी जीवन का बनाना

संदर्भ सूची:

1. रमणिका गुप्ता (सं.), आदिवासी विकास के विस्थापन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
2. [illegible] (उपन्यास), भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2009
3. [illegible] के.जे. बेबी
4. [illegible] समाचार पत्र 13.11.13
5. [illegible] ऑनलाइन पत्र

[illegible]

कादर जनजाति

[illegible]

"निज भाषा उन्नति सब उन्नति के मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटने न हिय के शूल।"

[illegible]

केरल राज्य की अल्पज्ञात भाषाएँ : अस्मिता की खोज

डॉ. रंजित एम.

[illegible]

केरल राज्य के आदिवासी जीवन

[illegible]

इरुला

[illegible]

"मण्णे नम्बिनेलम्मा मरमिरुक्क
मरत्तो नम्बिनेलम्मा मन्नीरुक्क
मरत्तो नम्बिनेलम्मा कोम्बिरुक्क
कोम्बे नम्बिनेलम्मा इलयिरुक्क
इलये नम्बिनेलम्मा पूविरुक्क
पूवे नम्बिनेलम्मा कायिरुक्क
काये नम्बिनेलम्मा पशमिरुक्क
पशतो नम्बिनेलम्मा नामिरुक्क नम्मे नम्बिनेलम्मा नाटिरुक्क।"

अर्थात- मिट्टी से, बना पेड़ा का, पेड़ के बिना डाल का, डाल के बिना पत्ते का, पत्ते के बिना फूल का, फूल के बिना फल का और फल के बिना हमारा और हमारे बिना देश का कोई अस्तित्व ही नहीं होता। इस तरह के कई गीत लिखे न होने पर भी पीढ़ी दर पीढ़ी गा रहे हैं।

[illegible]

12.	अल्पज्ञात भाषा तुळु और उसके सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य :	दत्तात्रय हेगडे	77
13.	हैदराबाद-हिंदी काव्य साहित्य के पाँच दशक : दस हीरे (1950 से 2000) :	डॉ. सोनाली मेहता	81
14.	गोम्मटेश्वर बाहुबली :	डॉ. सुषमा जैन	85
15.	केरल राज्य की अल्पज्ञान भाषाएँ : अस्मिता की खोज :	डॉ. रंजित एम.	90
16.	उत्तर केरल के पुलयर और तेय्यम :	डॉ. सुर्या बोस	96
17.	बंजारा लोक गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन :	प्रो. प्रतिभा मुदलियार	101
18.	सुगतकुमारी की कविता :	डॉ. एस. तंकमणिअम्मा	107
19.	कोरोना महामारी का सामाजिक सरोकार और तमिलनाडु की संस्कृति :	प्रो. निर्मला एस. मौर्य	112
20.	दक्षिण भारत के एक बहुमुखी प्रतिभाशाली शिक्षाविद : डॉ.डी.सी.पावटे :	डॉ.संध्या जवली	118
21.	तमिल भाषा :	डॉ.आर.एम.श्रीनिवासन	121
22.	कन्नड़ का वचन साहित्य :	डॉ. दिविक रमेश	126
23.	तमिलनाडु की ऐतिहासिक विरासत : तंजावूर कला :	जयश्री के. दास	130
24.	बीसवीं सदी के हिंदी और तेलुगु उपन्यासों में नारी के अस्तित्व चित्रण की तुलना :	के. वैशाली	135

पुस्तक समीक्षा

25.	'आडवि' (जंगल) उपन्यास की समीक्षा :	समीक्षक- कदम राष्ट्रपाल	139

प्रधान संपादक की कलम से

भक्ति चेतना और आण्डाल

स्त्री आलवार संत आण्डाल का जन्म आठवीं शताब्दी के मध्य में किसी वर्ष हुआ था। उनके पिता पेरियालवार (विष्णुचित्त) थे। आण्डाल विष्णुचित्त के द्वारा पालित-पोषित कन्या थी। विष्णुचित्त प्रतिदिन पुष्पवाटिका से अनेक प्रकार के फूलों को एकत्रित कर उसकी माला बनाते थे और अपने आराध्य श्री नारायण को धारण करवाते थे। पुष्पवाटिका में एक दिन तुलसी के पौधे के नीचे उन्हें एक बालिका प्राप्त हुई। नवजात बालिका को लेकर पेरियालवार (विष्णुचित्त) अपने घर आए और उसे अपनी पत्नी की गोद में सौंप दिया। पति-पत्नी ने उस बालिका का पालन प्यारपूर्वक अच्छी तरह से किया। पेरियालवार ने बालिका का नाम 'कोदै' रखा। इसका अर्थ है पुष्पों का गुच्छा। आण्डाल पुष्पवाटिका में तुलसी के पौधे के नीचे प्राप्त हुई थीं, इसलिए पेरियालवार को यह नाम अच्छा लगा। विष्णुचित्त नारायण के भक्त थे। प्रतिदिन उनकी पत्नी और वे स्वयं पुत्री आण्डाल को नारायण और श्रीकृष्ण की कहानियाँ सुनाते थे। अनेक धार्मिक कथाओं को सुनते हुए आण्डाल बड़ी हुई।

संतों के बीच विभिन्न प्रकार के सत्संगों को सुनते हुए उसका मानसिक विकास हुआ। वह परम कृष्णोपासक भक्त बन गई। विष्णुचित्त द्वारा बनाई गई पुष्पों की माला पहनकर वह दर्पण के सामने खड़ी हो जाती थीं और अपने सौंदर्य को देखते हुए सोचती थीं कि क्या वह कृष्ण को अच्छी लगेगी। उसका समर्पण श्रीकृष्ण के प्रति बढ़ता गया। कृष्ण के प्रति स्वयं को समर्पित कर देने का भाव इतना परिष्कृत हो गया कि वह सोचने लगी कि क्या वह श्रीकृष्ण के अनुकूल है, क्या कृष्ण उसे स्वीकार करेंगे। भगवान के लिए तैयार की गई माला को एक दिन पुत्री द्वारा पहने हुए देखकर पिता बहुत दुखी हुए। उन्होंने दूसरी माला बनाकर नारायण को पहनाई। उस दिन उन्होंने रात में स्वप्न देखा कि स्वयं नारायण उनसे कह रहे हैं कि आपने मुझे सुगंध रहित माला पहनाई है। 'कोदै' के द्वारा पहनकर उतारी गई माला मुझे स्वीकार्य है। भगवान नारायण ने कहा कि कल से आप 'कोदै' द्वारा पहनकर उतारी गई माला लेकर आइए और उसे ही मुझे अर्पित कीजिए। नारायण ने आण्डाल की प्रशंसा भी की। विष्णुचित्त को उस दिन समझ में आया कि मेरी पुत्री श्री नारायण की बड़ी भक्त है। एक दिन पिता ने पुत्री से विवाह के विषय में पूछा। आण्डाल ने बहुत स्पष्ट शब्दों में बता दिया कि वह किसी लौकिक पुरुष से विवाह नहीं करेगी। वह श्रीरंगनाथ को ही पति के रूप में स्वीकार करेगी। एक दिन वह अपने पिता विष्णुचित्त के साथ वधू के रूप में श्रीरंगनाथ मंदिर के गर्भगृह में गई और श्रीरंगनाथ में समाहित हो गईं। भक्त आण्डाल को श्रीरंगनाथ में विलीन होने की घटना को सत्य मानकर भक्त उसकी भक्ति की प्रशंसा करते हैं।

आण्डाल की दो प्रमुख कृतियाँ हैं– 1. तिरुप्पावै (दिव्य प्रतिमा) तथा 2. नाच्चियार तिरुप्पावै (दिव्य देवी वचन)। तिरुप्पावै में 30 और नाच्चियार

दक्षिण भारत की भाषा, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य एवं समाज आधारित रचनाओं (मौलिक, अनूदित एवं तुलनात्मक) की हिंदी में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका-**समन्वय दक्षिण**

खंड-4 अंक-2, चैत्र-ज्येष्ठ, 2077/अप्रैल-जून, 2020
© सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र

संपादकीय कार्यालय : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान,
2-2-12/5, डी.डी.कॉलोनी,
हैदराबाद-500007 (तेलंगाना)
फोन/फैक्स - 040-27427208
मोबाइल - 9456010035
ई-मेल - khshyderabad@yahoo.com

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत प्रति अंक रु. 40.00, वार्षिक रु. 150.00
संस्थागत वार्षिक शुल्क रु. 250/-
(डाक व्यय प्रति अंक रु.35/- तथा
वार्षिक रु.100/- अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक $ 10, वार्षिक $ 40.00

मुद्रक : **कर्षक आर्ट प्रिंटर्स, हैदराबाद**

आवरण चित्र : **चमड़े की कठपुतली**

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

स्वामित्व : **सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा**

अनुक्रम

संपादकीय
प्रधान संपादक की कलम से : प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय 05
भक्ति चेतना और आण्डाल

आलेख

1. हिंदी के लिए समर्पित महामनीषी : अरिगपूडि रमेश चौधरी : प्रो. एम. वेंकटेश्वर 10
2. केरल की संस्कृति और मुडियेट्ट : डॉ. सुमित पी. वी. 15
3. राष्ट्रकवि रायप्रोलु सुब्बाराव : बी. हरिकृष्ण 18
4. गुडिपाटि वेंकटचलम की कहानी 'विधवा' में स्त्री मुक्ति के प्रश्न : डॉ. प्रियदर्शिनी 24
5. हिंदी के विकास में दक्षिण भारतीय संस्थाओं का योगदान : डॉ. वर्षा कुमारी 30
6. कन्नड़ शब्दकोश के संपादकों का परिचय : 1. महबूबअली अ. नदाफ 2. डॉ.श्रीधर हेगडे 32
7. तेलंगाना राज्य के चंद प्रसिद्ध मंदिर : रचना चतुर्वेदी 44
8. डॉ.बालशौरि रेड्डी जी के उपन्यासों में मध्यवर्गीय चेतना : डॉ. बंडला श्रीनिवासराव 50
9. हिंदी और तेलुगु की आधुनिक कविता में राष्ट्रीयता : डॉ. अन्नदासू सरला देवी 62
10. तेलुगु के अमर वाग्गेयकार नाद-ब्रह्म श्री त्यागराज : डॉ. बी. हेमलता 65
11. केरल की 'महादेवी वर्मा' है कवयित्री सुगत कुमारी : डॉ. सती गोपालकृष्णन 72

प्रकाशन संख्या/RNI No.-TELHIN/2016/70799
ISSN : 2456-9445
खंड-4, अंक-2, चैत्र - श्रेष्ठ 2077 / अप्रैल - जून, 2020

समन्वय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका